उन बीरां का के जीणा, जिनके बालम छह नंबर म।

6 जाट बटालियन जो 1914 के विश्वयुद्ध में जर्मन को हरा के आई थी, उनके इस शौर्य पर दादा दीप-चंद सांगी द्वारा गाये गए आल्हे का एक अंश:

जर्मन नैं गोला मारया, जा फूट्या अम्बर म्ह|

गरद मैं सिपाही भाज्जे, रोटी छूटी लंगर म|

उन बीरां का के जीणा, जिनके बालम छह नंबर म।

जर्मन म जा कें लड़िये, अपणे माँ-बापां का ना करिए|

टैंक-तोपां के आगै लड़िये, अपणी छाती नैं दे खोल।

फोटो: 1914 में 6 जाट बटालियन की टुकड़ी फ्रांस के लील (Lille) शहर के पास Port Arthur - 59125 Trith-Saint-Léger - जर्मन फ्रंटियर पर फुर्सत के क्षणों में

फोटो में: खड़ों में बाएं से पांचवे हवलदार चौधरी रणजीत सिंह डूडी (बैज नम्बर 2038) हैं जो कि विख्यात इतिहासविद श्री धर्मपाल डूडी जी के दादा जी हैं। और इसी पंक्ति में बाएं से छटे हवलदार चौधरी हर-नारायण सिंह (बैज नम्बर 2049) हैं जो इस युद्ध में शहीद हो गए थे, यह श्री धर्मपाल डूडी जी के ताऊ-दादा जी थे| दोनों भाई एक-साथ भर्ती हुए, एक साथ हवलदार बने|

फोटो सौजन्य: श्री धर्मपाल डूडी जी द्वारा लिखित पुस्तक "फ्रांस से कारगिल तक" से

War Memorial of 6 Jat Battalion in France: There is war memorial for martyrs of 6 Jat Battalion in Rue de Festubert 62660 Givenchy – Festubert. It is around 34 kms south-west to Lille Metropole of France in Northern France.

Additional Note: There are over 200000 Indian army martyrs worldwide, whose war memorials are in 44 countries from UK, France to Singapore. 50% of these are Jats.